Title: Demand to declare 18th December as a public holiday on account of death anniversary of Baba Guru Ghasidas.

श्री पुन्नू लाल मोहले (बिलासपुर) : माननीय सभापति जी, मेरा भारत सरकार से निवेदन है कि १८ दिसंबर को संत बाबा गुरु घासीदास जी की जयन्ती पर्व के अवसर पर मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सार्वजनिक अवकाश वर्षों से घोषित किया जा चुका है। इस अवसर पर सन्त गुरू घासीदास जी के डाक-टिकट भी जारी किये जा चुके हैं। संत गुरु घासीदास जी का विश्वविद्यालय भी बिलासपुर में स्थापित है। मेरा निवेदन है कि सतनामी समाज और उनके उपासक मध्य प्रदेश ही नहीं, बल्कि अन्य राज्यों और संपूर्ण भारत में कोने-कोने में करोड़ों की संख्या में फैले हुए हैं। वे अनुसूचित जाति के अंतर्गत आते हैं।

संत बाबा घासीदास जी का जन्म १८ दिसंबर को ग्राम गिरौदपुरी, जिला रायपुर, मध्य प्रदेश में हुआ था। मैं केन्द्र सरकार से मांग करता हूं कि केन्द्र सरकार ने जिस तरह अन्य समुदायों के महापुरुषों की पुण्य तिथि पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है, उसी तरह करोड़ों सतनामी समाज एवं संत बाबा गुरु घासीदास जी की उपासना करने वालों की भावना का आदर करते हुए १८ दिसंबर को बाबा गुरू घासीदास जी की जयन्ती पर्व पर सार्वजनिक छुट्टी घोषित करने की कृपा करें।

श्री अजीत जोगी : जो मांग इन्होंने की है, हम लोग भी उसका समर्थन करते हैं।

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : मुझे एक मिनट बोलने दिया जाए। यह सारे सदस्यों का मामला है।

सभापति महोदय : हमने सुदीप बंदोपाध्याय जी को बुलाया है। आप बाद में बोलियेगा।

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : यह सारे माननीय सदस्यों का मामला है।

सभापति महोदय : हम समझते हैं कि आप क्या बोलना चाहते हैं।

... (व्यवधान)

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : सर, मुझे बोलने का मौका कब मिलेगा?

सभापति महोदय : आपको बाद में मौका मिलेगा।

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : महोदय, यहां श्री राम नाइक जी बैठे हैं, वे बाद में चले जायेंगे। यह उनके तथा सबके हित की बात है।

... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: I have called Shri Sudip Bandyopadhyay.

श्री मोहम्मद अली अशरफ फातमी : सर, यह बहुत सीरियस मामला है, हम इसे जीरो ऑवर में नहीं उठायेंगे तो कब उठायेंगे। श्री राम नाइक जी चले जायेंगे, वे हमारे मंत्री हैं और इस मामले में वे हमारे लीडर भी है।

सभापति महोदय : फातमी जी, आप बैठिये। हम भी जानते हैं कि यह सबका मामला है।

श्री राजो सिंह (बेगूसराय): सभापति महोदय, हम अधिक रूपये चाहते हैं तो सब लोग बोलने नहीं देते हैं, इनको बोलने दीजिए, यह सबके हित की बात है

... (व्यवधान)